International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 12, Dec 2023
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक परिदृश्य

डॉ0 भालचन्द सिंह नेगी, असि0प्रो0 भूगोल,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है,उसके समाज की पहचान उसकी संस्कृति से होती है।किसी समाजिक समूह के जी वनयापन की पद्धति को ही संस्कृति कहते हैं।जिस में उस समाज के मनुष्यों का ज्ञान,कला नीति नियम परम्पराये विश्वास, धर्म दर्शन जैसे सभी तत्व सामिल होते हैं मेले और त्यौहार भी इन्हीं परम्पराओं के अंग हैं।

किसी क्षेत्र के समाज की संस्कति की अभिव्यक्ति उस क्षेत्र के भौगोलिक वातावरण से अन्तःक्रिया के फलस्वरूप होती है।मनुष्य परिपूरक समाज के लिए अपने से पृथक समाज से सांस्कृत सम्बन्ध स्थापित करता है।

गढवाल हिमालय के भौगोलिक वातावरण के अनुसार एक अलग सांस्कृतिक विशिष्टता प्रदान करता है,इसका भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप भी अन्य क्षेत्रों एकदम पृथक है,इसकी संस्कृति यहॉ के विभिन्न भौगोलिक तत्वों से प्रभावित है,यहॉ के रीतिरीवाज एवं परम्परायें भी प्रकृति से अधिक प्रभावित मिलते हैं।यह क्षेत्र अपने भौगोलिक वातावरण के आधार पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाऐ हुऐ है।

उत्तराखण्ड की अपनी जीवन पद्धति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व लोक परम्पराऐं यहॉ के मेले त्योहारों पर साफ साफ झलकती है,यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही प्रकृति से ओत प्रोत रहा है।इसकी एकान्त मनोहारी दृश्यावली के कारण देवता और ऋषिमुनि यहॉ आकर निवास करने लगे इसलिऐ इसे देवभूमि भी कहा जाता है यहॉ के मेले त्योहार,रीतिरीवाज,खान पान,भाषा बोली एवं परम्परायें प्रकृति से अधिक प्रभावित है?

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

स्थापत्य कला व भवन भौली :स्थापत्य कला के रूप में यहॉ के भवनो में मुख्य द्वार जिसे खोली कहते हैं उस खोली के उपर बीच में श्री गणेश जी की मूर्ति स्थापत्य नकासीदार कलाकृतियों से सुशोभित रहती है, इस के साथ साथ खोली दरवजों और मकान व मन्दिर के छजों पर (प्राकृतिक बातावरण से सम्बंधित) बाघ, शेर, हीरन के साथ साथ प्राकृतिक फूल,पत्ते,पेड,पौधों क नकासीदार कलाकृतियों युक्त भवन शैली देखी जा सकती है, आज भी यहां के महलों मन्दिरों भवनों के पत्थर भित्तियों व काष्ठ कृतियों पर विभिन्न देवी देवताओं वनस्पतियेां के चित्र उकेरे देखे जा सकते है।

खान .पानः इस क्षेत्र में खान पान के रूप में चौलइ का आटा मंडवे गेहू जौ आटे के रूप में,कोणी, झंगोरा, फाफर, चींणा आदि चावल के रूप में, काले भट्ट की भट्टवाणी, काली दाल का चौसा, चुटवाणी, गैथ का फाणू, गथवाणी, रैस, तोर राजमा(काली, भूरी, लाल सफेद)दाल के रूप में,तथा झोली, राबडा, कापूला, ापूल कोदे की बाडी आदि, सब्जी के रूप में लिंगुडे की सब्जी, तेडू पिनालू, गेठी, मुवा, च्चा केले की, तिमला, क्वेराल, कण्डाली, तुमडे की, भुजले आलू गोभी प्याज ,टमाटर, भिन्नडी, करेला, जंगली च्यों मशरूम, आदि फलफूलो का प्रयोग किया जाता रहा है, इसके अलावा फलो के रूप में हिंशोल, किलमोड, करोंजा, थागल, मेलू घिंघारू, तिमला, बेडू, काफल, फइंडा, सेब, नाशपाति, केला, अमरूद, भमोरा बुरास आदि फल फूल बडी मात्रा में खाये जाते है, वातावरणानुसार क्षेत्र विशेष में मोटे अनाजों का प्रयोग अधिकाधिक किया जाता रहा है।

पहनाव उत्तराखण्ड.– यहॉ पहले लोग (पुरूष वर्ग) ऊन का दोखा, सफेद सूती धोती, कुर्ता, क्वठामति(गरम वस्त्र के रूप में) नोकिया जुते, लकडी के खडाऊ आदि के साथ पहाडी टोपी पहनने का फैसन था,(महिलाऐं) लवा, पाखुला, चादरी, धोती, आगडा, पागडा, सिर पर गमछा हाथ पर हथकंडी का प्रयोग पर्स के रूप में, आदि वस्त्र पहना करती थी किन्तु आज आधुनिकता के प्रभाव से महिला व पुरूष दोनो आधुनिक वस्त्रों का अधिक प्रयोग करते देखे जा सकते हैं।केवल आज ग्रामीण क्षेत्रों में पुराना फैसन देखा जा सकता है।

आभूशण – यहॉ आभूषण के तौर पर पुरूष मुदडी (अॅगूठी) महिलाऐं नाक में नथ, बुलाक, फुली, कानो में कुण्डल मुर्कुली, गल्ले में गुलबन्द, हार, हासुली, हाथो में धागुली, पौछी चुडी, कन्धेपर स्योणी, सागल, पिन, माथे पर बिन्दी, सिर पर शिशफूल, मांग टिका, पॉव में पोछी पायल, विछवा कमर पर करधनी कमरबन्ध, अमृति, चन्द्रहार, लक्ष्छा, आदि सोने चांदी के आभूषण पहने जाते रहे है।

लोक बाध्य यंत्र– इस क्षेत्र विशेष की लोक संस्कृति विश्वविख्यात रही है,यहॉ की संस्कृति को जानने की अध्ययनकर्ताओं में विशेष रूचि रही है। यहा बाध्य यंत्रों के रूप मे वादी, जागरी, हुडकिया, मिरासी, सामाजिक सांस्कृतिक आयोजनो मे ढोल दमाऊ, नगाडा, मसकबीन, डौंर हुडका, भंकोर रणसिगा, घंण्टा,

तुरही, नफीरी, डौंर थाली, नगाडा आदि का प्रयोग मांगलिक उत्सव त्यौहारों के साथ साथ धन व मडवा की रूपाई गुडाई वृक्षारोपण, प्रातः और संध्याकाल के समय देव दवताओं को धुन्याल पूजा पाठ में प्रयोग किया जाता है।

लोक नृत्य एवं लोक गीत –.बग्गडवाल नृत्यःयह प्राचीन गाथा पर आधारित नृत्य है, इसमें विशेष पहनावा पहन कर यह नृत्य किया जाता है। नाचने वाले व्यक्ति को आछरी द्वारा हर लिया जाता है,(यह एक प्राचीन ऐतिहासिक घटना का वर्णन तब से यह भूत काया में अवतरित माना जाता है। तभी से जीतू देवता के नृत्य की प्रथा चली आ रही है, मान्यता है कि जीतू देवता से पर्वतीय क्षेत्र के सभी जीव जन्तुओं की रक्षा जंगली जानवरो से होती है। यह नृत्य प्रत्येक गॉव द्वारा समय समय पर आयोजित किया जाता है।

पांडव नृत्य :यह नृत्य महाभारत काल से यहॉ के गॉवों में आयोजित होता आ रहा है,प्रत्येक गॉव में पांडव चौक होता है। पॉचों पाण्डवों के सिर पर सफेद पगडी व सफेद घाघरा पहन कर और वस्त्र आभूषण पहन कर धनुष वाण गददा रख कर नृत्य किया करते है और गीतकार पण्डवाणी गाते रहते हैं।

ग्वरील भैरों नृत्यः इस नृत्य में बाध्य यंत्र के रूप में डौंर थकुली बजाकर धुनी जला कर चीमटा फाबरा तैयार कर देवता अवतरीत किया जाता है।

ऐडी आछरी नृत्य–:इस में पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं पर जंगल की ऐडी आछरी (स्वर्ग की परियॉ)अवतरीत होती है तो इस में भी धौसिया या घटिया द्वारा डौंर थाली बाजाकर नचाया जाता है।

भूत नृत्य–इसमें जब किसी के पितृ दोष लग जाते तो उनको भूत काय में अवतरित किया जाता है, अल्पआयु व दुर्घटना में मृत आत्मा को भूत काय में नचाया जाता है।

पौणा व सरौ नृत्य– यह उत्तराखष्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में भोटिया जन जाति में प्रचलित है यह नृत्य भोटिया लोगों के शादी व्याह व सामाजिक संस्कारो, उत्सवों पर विशेष रूप से किये जाने की प्रथा है,यह नृत्य खुखरी व ढोल दमऊ बजाकर ताल मिला कर तेज गति से स्त्री–पुरूषों के जोडे में किया जाता ह

चौफला,छाछरी और झुमलो नृत्य–यह नृत्य महिला पुरूषों द्वारा समूह में गाया जाता है,यह शादी विवाहों उत्सवों में ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन गीत व नृत्य में किया जाता है

लोक उत्सव और मेले–उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति की मेले व त्योहार,उत्सव के रूप में विशेष पहचान रही है। यहा पर मेले को कौथिग तथा मेले में उमडी लोगों की भीड–भाड को कौथिग्यर कहते हैं जैसा कि कोथीग का अर्थ कोतुहल व उत्सव का अर्थ आनन्द या मनोरंजन से है,यह क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से अपने आप में विशिष्ट पहचान बनाऐ हुऐ है। क्षेत्र विशेष में लगने वाले बद्रीनाथ–केदारनाथ माता मूर्ति

मेला के साथ विश्व धरोहर के रूप में बण्ड पीपलकोटी का रमाण मेला,जोशीमठ में लगने वाला जाख कौथिग, उत्तरायणी में यहां के सभी प्रयागों और नदियों पर प्रत्येक मकर सक्रान्ति में पवित्र गंगा स्नान पर्व के रूप में महोत्सव के रूप में मनाते आ रहे हैं,इसे उत्तरैणी मेला भी कहते हैं

विखोती मेंला–यह मेला भी सम्पूर्ण उत्तराखष्ड में प्राचीन समय से नदि घाटो व प्रयागों पर विभिन्न कार्यक्रमो जैसे–झुमेलो ,छाछरी चौपला थडिया, जागर आदि कार्यक्रम आयोजित होते आ रहे हैं।

नन्दा देवी राजजात –यह सम्पूर्ण राज्य में 12वर्षो में आयोजित होता है, इसमें कुमाऊ व गढवाल दोनो मंण्डलो के आम जन अपनी ध्याण(बेटी) को ससुराल सामाग्री सहित(चूडी ,बिन्दी, साजो सामान के साथ–साथ क्लेऊ,खाजा,रूट,आदि)कैलास को विदा किया जाता है, इसमे सम्पूर्ण क्षेत्र में यह कौथिग के रूप में हर्षोउलास से मनाया जाता है। इसके साथ प्रत्येक वर्ष नन्दा अष्टमी को कोण–कुणजा और कोऊ(चीड के पेड)से नन्दा भगवती बनाकर पाती कौथिग–त्योहार धूम धाम से मनाने की प्रथा प्रचलित रही है।

इसके अलाव सम्पूर्ण प्रान्त के प्रमुख मेले त्यौहार व उत्सवों में पौडी(गढवाल)के खाश पट्टी में लगने वाला गेंदी मेला, सि़द्धबली मेला कोटद्वार में,श्रीनगर का कमलेश्वर में लगने वाला वैकुण्ड चतुरदशी मेला, मगसीर–पौष में लगने वाला कांसखेत–घडियाल कौथिग, खाश पट्टी में लगने वाला गेंन्दी कौथिग प्रसिद्ध है, रूद्रप्रयाग जनपद के धनपुर पट्टी में लगने वाला हरियाली देवी मेला, जखोली तहसील के बंगर पट्टी में लगने वाला वधाणी ताल मेला, देवरीया ताल मेला, अगस्तमुनि का माघ मेला आदि, चमोली(गढवाल)में लगने वाला बधाण कोथिग नारायणबगड, थराली,व देवाल विकासखष्ड में,नोठा कौथिग आदिबद्री में, सती माता अनुसुया मेला दत्तात्रेय जन्म दिवस पर गोपेश्वर–मण्डल में,रणवा कौथिग गैरसैण के खनसर पट्टी में,जैती कौथिग लासी मजोठी में, तिमुडिया मेला जोशीमठ में,उत्तर काशी का माघ मेला, रवाइ क्षेत्र में लगने वाला विशु मेला,जौनपुर रवाइ का मासू मेला, मौण मेला, टिहरी जनपद का मदन नेगी देवता कौथिग, प्रताप नगर तहसील में लगने वाला प्रसिद्ध नाग मेला, सुरकन्डा माता मेला,वीर भड मादो सिहं भण्डारी कौथिग मलेथा में, कुमाऊ क्षेत्र का प्रसिद्ध नैना–सुनन्दा मेला अल्मोडा का जागेश्वर मेला गोलू–चितई मेला, बागेश्वर का प्रसिद्ध बाघ नाथ मेला, चम्पावत का देवी–धूरा मेला, पूर्णागिरी देवी का प्रसिद्ध मेला, पिथौरागढ का ज्योलजीवी आदि मेले सुप्रसिद्ध मेलो के रूप में देखे जा सकते हैं। इसके अलावा मैदानी क्षेत्रों में दहरादून का विश्व प्रसिद्ध झण्डा मेला और हरिद्धार का विश्व प्रसिद्ध कुम्भ मेला बहु प्रचलित मेलो में सुमार रहे हैं।

शोध संदर्भ –

1. भट्ट, दिया (1993), उत्तराखण्ड के भवनों का बदलता स्वरूप, कुमाऊं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा परिसर तथा उत्तराखण्ड शोध संस्थान, पंतनगर द्वारा प्रकाशित, 83
2. रतूड़ी, हरिकृष्ण (1995), गढ़वाल का इतिहास, भाग–7, वीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा पौड़ी गढ़वाल, 69
3. नेगी, भालचन्द सिंह (2010), गढ़वाल हिमालय के सांस्कृतिक परिवर्तनों में परिवहन एवं संचार माध्यमों की भूमिका, पृ0 96
4. डबराल, शिवप्रसाद (1969), उत्तराखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, खण्ड–1, भाग–7, वीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा गढ़वाल, 147।